उद्योगपर्व कथासार

महाभारत के अठारह पर्वों में उद्योगपर्व पाँचवाँ है। इसमें दस उपपर्व तथा ६६८२ श्लोक हैं।

१. सेनोद्योगपर्व

उद्योगपर्व के इस उपपर्व में (१-१९) १९ अध्याय तथा ५९० श्लोक हैं। विराटपुत्री उत्तरा के साथ अभिमन्यु का विवाह होने से पाण्डव तथा उनके पक्ष सन्तुष्ट हुये। दूसरे दिन पाण्डव विराट की सभा में उपस्थित हुये। सभा में सब से पहले वृद्ध तथा मान्य विराट तथा द्रुपद दोनों आसनों पर विराजमान हुये। तत्पश्चात् पिता वसुदेवके साथ श्रीकृष्ण और बलराम ने भी आसन ग्रहण किये। राजा विराट तथा द्रुपद के पुत्र और द्रौपदी के पुत्र एवमन्य महारथी भी उस सभा में विराजमान थे। सब लोग श्रीकृष्ण के सारगर्भित वचन सुनने में आसक्त थे। भगवान् श्रीकृष्ण ने प्रस्ताव किया कि सुबलपुत्र शकुनि ने द्यूतक्रीडा में चल द्वारा से युधिष्ठिर को परास्त करके कैसे राज्य छीन लिया है। उस द्यूतक्रीडा में शर्त रखी गयी थी कि जो हारे वह बारह वर्ष तक वनवास तथा एकवर्ष तक अज्ञातवास करे। द्यूत में पराजित पाण्डव बारह साल वनवास करके फिर एक साल महाराज विराट के पास क्लेश सहते हुये अज्ञातवास बिताये थे। कौरवों के छल कपट के कारण पाण्डवों को असह्य कष्ट भोगना पडा। वनवास तथा अज्ञातवास पूरा करके पाण्डव अपनी सम्पत्ति को माँग रहे हैं। सत्यपरायण युधिष्ठिर अपने भाइयों के साथ हमारे सामने उपस्थित हैं। कौरव यदि इनके साथ विपरीत व्यवहार करेंगे तो पाण्डव अवश्य उन सबको मार डालेंगे। दुर्योधन का मत अब तक हम नहीं जान सके। इसलिए कोई धर्मशील पुरुष दूत बनकर वहाँ जाये और युधिष्ठिर को आधा राज्य दिलवाने का दुर्योधन को हितोपदेश दे। बलराम ने श्रीकृष्ण के भाषण की भूरि भूरि प्रशंसा की और कहा कि सत्यशील युधिष्ठिर अपना राज्य छोडकर केवल आधे के लिए ही प्रयत्नशील हैं। इसलिए पाण्डवों को आधा राज्य देने से कौरवों को शान्ति मिलेगी और प्रजा का हित भी होगा। इसलिए कौरव और पाण्डवों के बीच शान्ति स्थापना करने के लिए दुर्योधन के पास दूत को भेजना अच्छी बात है। युधिष्ठिर के प्रयोजन की सिद्धि के लिए दूत वहाँ जाकर विनयपूर्वक उन्हें समझाये। किसी भी दशा में कौरवों को उत्तेजित या कुपित नहीं करना चाहिए। समस्त सुहृद् जुए के खेल से युधिष्ठिर को निवारण करने पर भी उनकी बात युधिष्ठिर ने नहीं मानी। द्यूतक्रीडा में आसक्त होकर राज्य को खोया। अन्य खिलाडी होने पर भी उनको छोडकर युधिष्ठिर ने शकुनि को ललकारा और उसके साथ द्यूत खेलकर हार गया। इस प्रकार बलराम कह ही रहे थे। इतने में सात्यकि सहसा उछलकर खडा हो गया और कुपित होकर उसके भाषण की कडी आलोचना की। उसने कहा कि अन्तःकरण के अनुसार किसी भी व्यक्ति भाषण करता है। बलराम ने भी ऐसा ही

किया। वनवासबन्धन से विमुक्त होकर अब पाण्डव अपनी सम्पत्ति के अधिकारी हो गये हैं। शत्रुओं के सामने याचना करना ही अधर्म और अपयश की बात है। युधिष्ठिर को अवश्य राज्य मिलना ही चाहिये। अन्यथा सभी कौरव युद्ध में मारे जायेंगे। द्रुपद ने भी उसके वचनों का
समर्थन किया और कहा कि बलदेव का कथन मुझे ठीक नहीं लगता। कौरवों के पास शीघ्रातिशीघ्र दूत को भेजना प्रथमतः परमावश्यक है। उसने सलाह दिया कि उसके पास पुरोहित विद्वान् ब्राह्मण हैं। उन्हें धृतराष्ट्र के पास दूत के रूप में भेजना उचित है। भगवान् श्रीकृष्ण अपनी सम्मति देकर द्वारका चले गये। तदनन्तर पांचाल नरेश ने युधिष्ठिर की सम्मति से अपने पुरोहित को पुष्य नक्षत्र से युक्त जय नामक मुहूर्त में कौरवों के पास दूत के रूप में भेजने का निर्णय लिया। राजा द्रुपद का आदेश पाकर सादाचारसम्पन्न पुरोहित हस्तिनापुर को प्रस्थान हुये।

पुरोहित को हस्तिनापुर भेजकर पाण्डव अन्य राजाओं के यहाँ भी अपने दूतों को भेजने का प्रबन्ध किया। सब स्थानों में दूत भेजकर स्वयं अर्जुन द्वारकापुरी की ओर रवाना हुये थे। राजा दुर्योधन ने गुप्तचरों के द्वारा पाण्डवों की चेष्टाओं की जानकारी प्राप्त कर ली। जिस दिन अर्जुन द्वारका को निकला उसी दिन दुर्योधन भी द्वारकापुरी चला। वे दोनों श्रीकृष्ण के सोते समय वहाँ पास गये। पहले दुर्योधन उसके भवन में प्रवेश किया और श्रीकृष्ण के शीर्ष प्रदेश की ओर रखे हुये श्रेष्ठ आसन पर बैठा। तत्पाश्चात् अर्जुन श्रीकृष्ण के शयनागार में प्रवेश करके बडी नम्रता के साथ हाथ जोडकर उनके चरणों के पास खड रहे हुए। जागने पर श्रीकृष्ण ने पहले अर्जुन को देखा। उसने दोनों का यथोचित सत्कार करके उनके आगमन का कारण पूछा। तब दुर्योधन ने युद्ध में श्रीकृष्ण की सहायता माँगी। श्रीकृष्ण ने कहा कि दुर्योधन के पहले आने पर भी मैं ने जागकर पहले अर्जुन को देखा। इसलिए दोनों की सहायता करने के लिए मैं तैयार हूँ। लेकिन श्रुतिवचन से पहले छोटी उम्रवाले अर्जुन पहले अपनी अभीष्ट वस्तु पाने के अधिकारी है। मेरे पास दस करोड (अर्बुद) गोपों की विशाल सेना है। युद्ध के लिए सदा वे उद्यत रहेंगे। दूसरी ओर से अकेला मैं रहूँगा। मैं न तो युद्ध करूँगा न कोई शस्त्र धारण करूँगा। हे अर्जुन! इन दोनों में से एक को पहले चुन लो। श्रीकृष्ण के ऐसा कहने पर अर्जुन ने श्रीकृष्ण को चुन लिया। दुर्योधन मन ही मन अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उसने सारी सेना माँग ली। सारी सेना पाकर संतुष्ट दुर्योधन बलराम के पास जाकर अपने आने का कारण बताया। उस ने कहा कि मैं न तो अर्जुन की सहायता करूँगा न दुर्योधन की। क्षत्रिय धर्म के अनुसार युद्ध करो। बलराम के ऐसे कहने पर दुर्योधन मन ही मन अत्यन्त प्रसन्न हुआ और श्रीकृष्ण को ठगा गया जानकर युद्ध में अपन विजय निश्चित समझ लिया। तदनन्तर दुर्योधन कृतवर्मा के पास गया। उसने उसे एक अक्षौहिणी सेना दी। वह बडी प्रसन्नता के साथ हस्तिनापुर लौट गया। अर्जुन की प्रार्थना के अनुसार श्रीकृष्ण उसके रथसारथी बने।

दूत मुख से पाण्डवों का सन्देश सुनकर राजा शल्य अपने पुत्र और विशाल सेना के साथ युधिष्ठिर को मिलने निकला। यह जानकर दुर्योधन ने मार्ग में ही उसके स्वागत सत्कारों का बडा प्रबन्ध किया। राजा शल्य अत्यन्त प्रसन्न होकर दुर्योधन से वर माँगने को कहा। उसने अपनी सम्पूर्ण सेना के अधिनायक बनने की प्रार्थना की। प्रसन्नतापूर्वक शल्य ने उसे मान लिया। फिर वह युधिष्ठिर के पास गया और उसने दुर्योधन को वरदान देने की बात सुनायी। युधिष्ठिर ने उनसे कहा कि महाराज! सारथ्य के काम में आप श्रीकृष्ण के समान माने जाते हैं। यदि आप मेरा प्रिय करना चाहते हैं तो उस युद्ध में आपको अर्जुन की रक्षा करनी है। कर्ण और अर्जुन
सम्मुख होने पर आप कर्ण का उत्साह भंग करते रहें। शल्य ने उसका वचन मान लिया और कहा कि मैं आपका मनोरथ अवश्य पूर्ण करूँगा। इसके सिवा और भी जो कुछ मुझसे हो सकेगा वह भी अवश्य करूँगा। विधि के बलवत्तर होने से महापुरुष भी समय समय पर कष्ट उठाते हैं। ऐसा कहकर शल्य ने इन्द्र कष्ट भोगने का वृत्तान्त बताया। वह युधिष्ठिर से बिदा लेकर मद्रराज शल्य अपनी सेना के साथ दुर्योधन के यहाँ चला गया। दुर्योधन के अनुकूल समस्त नरेश यथावकाश अपनी सेना को दुर्योधन के यहाँ भेज दिया। उसके पास सब मिलाकर ग्यारह अक्षौहिणी सेनायें एकत्रित हो गयीं।

२. सञ्जययानपर्व

इस पर्व में (२०-३२) १३ अध्याय तथा ३७७ श्लोक हैं। द्रुपद के पुरोहित दूत के रूप में कौरवों के पास पहुँचकर धृतराष्ट्र, भीष्म तथा विदुर से सम्मनित हुआ। उसने पाण्डवों के सामर्थ्य को बताया और वहाँ के लोगों से कहा कि आप लोग धर्मानुसार पाण्डवों का आधा राज्य, जो उन्हें मिलना चाहिये उसे दे दीजिए। भीष्म ने भी उनकी बात का समर्थन किया और अर्जुन के पराक्रम का वर्णन करने लगा। बीच में कर्ण ने भीष्म के वचनों का अवहेलना करते हुए कहा कि दुर्योधन किसी के भय से अपने राज्य का आधा ही नहीं, चौथा भाग भी नहीं देगा। भीष्मजी मूर्खता के कारण अपनी बुद्धि को अधार्मिक बना रहे हैं। कर्ण के वचनों का तिरस्कार करते भीष्म ने पुनः अर्जुन का पराक्रम तथा विराटनगर के युद्ध में अर्जुन के हाथ में छः महारथियों के पराजय का प्रस्ताव किया। तदनन्तर धृतराष्ट्र ने कर्ण को डाँटकर भीष्म का सम्मान किया। उसने कहा कि भीष्म का यह उपदेश सब के लिए हितकारक है। धृतराष्ट्र ने पुरोहित को सत्कार करके भेज दिया और पाण्डवों के पास संजय को भेजने का निर्णय किया। राजा धृतराष्ट्र के आदेश के अनुसार उसकी ओर से पाण्डवों के कुशल समाचार पूछने तथा भरतवंशियों के हित के अनुकूल व्यवहार करने के लिए संजय पाण्डवों से मिलने उपप्लव्य गया। युधिष्ठिर से मिलकर उसने उसे कुशलप्रश्न पूछा। कुशल समाचार के बाद युधिष्ठिर ने कौरवों के व्यवहार के बारे में पूछा। उसके प्रश्नों का उत्तर देकर संजय ने धृतराष्ट्र के संदेश को सुनाया। उस समय वहाँ

श्रीकृष्ण, सात्यकि, राजा विराट तथा सब पाण्डव वहाँ उपस्थित थे। संजय ने कहा कि राजा धृतराष्ट्र शान्ति को चाहते हैं। उनका शान्तिसन्देश पाण्डवों को अभीष्ट हो और दोनों पक्षों में सन्धि स्थापित हो जाय। यह सुनकर युधिष्ठिर ने कहा कि संजय! युद्ध का प्रस्ताव हम भी नहीं लाये। तुम क्यों भयभीत हो रहे हो? राजा धृतराष्ट्र तथा उनके पुत्र ही अधर्म के मार्ग का आश्रय ले रहे हैं। हमारे विषय में कौरवों का दुर्व्यवहार छिपा नहीं सकता। इन्द्रप्रस्थ में जो मेरा राज्य था उसे दुर्योधन लौटा दे। संजय ने युधिष्ठिर को युद्ध के दोषों को बताकर युद्ध से विमुख होने की फिर सलाह दिया और कहा कि "राजन्! आप अपने मन्त्रियों की इच्छा से यदि युद्ध करना चाहते हैं तो अपना सर्वस्व उन्हें दे दीजिये। परन्तु अपने कुटम्ब का वध करके धर्म मार्ग से भ्रष्ट न हो जाइये"। उनके उपदेश सुनकर युधिष्ठिर ने कहा कि "सञ्जय! पहले यह जान लो कि क्या पाण्डव धर्म मार्ग का आश्रय ले रहे हैं या अधर्म? यहाँ धर्मेश्वर, कुशल नीतिज्ञ भगवान् श्रीकृष्ण बैठे हैं। वे दोनों पक्षों का हित चाहनेवाले
हैं। इस विषय पर वे अपना विचार प्रकट करेंगे"।

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा कि "मैं भी दोनों पक्षों की भलाई चाहता हूँ। पाण्डुपुत्र कौरवों से सन्धि करके शान्तिपूर्वक रहें। लेकिन पैतृक सम्पत्ति पाण्डवों को दिये बिना यह सम्भव नहीं है। धार्मिक पाण्डव शान्ति के लिए तैयार हैं और युद्ध करने में भी समर्थ हैं। सोचविचार करके धृतराष्ट्र से यथार्थ बातें कहना। श्रीकृष्ण अपना विचार प्रकट करने के बाद संजय उनसे बिदा लेकर हस्तिनापुर लौट जाने की अनुमति माँगी। युधिष्ठिर ने कहा कि "संजय! तुम वहाँ जाकर सब से कुशल पूछकर उन्हें मेरा कुशल समाचार भी निवेदन करना। फिर कुरुवंशीयों को मेरा यह संदेश सुनाना कि पाण्डव शान्ति रखने में समर्थ हैं और युद्ध करने में भी"। पाण्डवों का सन्देश लेकर संजय धृतराष्ट्र से मिला और उनसे पाण्डवों का कुशल समाचार कहकर धृतराष्ट्र के कृत्यों की निन्दा की। उसने कहा कि "महाराज! समस्त संसार में एकमात्र आप ही अपने पुत्र के अधीन होकर द्यूतक्रीडा में उसकी प्रशंसा की। उसका भयंकर परिणाम आप देख लीजिए। अविश्वसनीय पुरुषों को एकत्रित करके विश्वसनीयों को दण्ड दिया। राजन्! अब मैं थक गया हूँ। प्रातः कौरवसभा में सब के समक्ष युधिष्ठिर का सन्देश सुनाऊँगा। धृतराष्ट्र ने उसे घर जाने की आज्ञा दी।

३. प्रजागरपर्व

इस पर्व में (३३-४०) ८ अध्याय तथा ५९३ श्लोक हैं। संजय के चले जाने के बाद धृतराष्ट्र ने विदुर को बुलाया। धृतराष्ट्र की आज्ञा पाकर विदुर महाराज से मिला। राजा ने विदुर से संजय के आने का प्रस्ताव करके कहा कि "युधिष्ठिर का सन्देश लाया संजय मुझे निन्दा करके चला गया। वह सन्देश कल सभा में सुनायेगा। युधिष्ठिर के मन की बात न जानने से मेरा हृदय जल रहा है।

चिन्ताक्रान्त होने से अभी तक नींद नहीं आयी। शान्ति नहीं मिलती। बडी चिन्ता हो रही है। मेरे लिए जो कल्याण की बात है, उसे कहो"। उनकी बात सुनकर विदुर ने कहा कि "बलवान के साथ विरोध करनेवाला दुर्बल को, जिसका सर्वस्व हर लिया गया है उसको, कामी को तथा चोर को नींद नहीं आती। हे राजन्! आप इन दोषों में से किसी एक के सम्पर्क में पडे हैं क्या? फिर धृतराष्ट्र ने उनसे धर्मयुक्त तथा कल्याणकारक वचन सुनाने की प्रार्थना की। विदुर ने पण्डित और मूर्ख के लक्षण बताकर सत्य और धर्म मार्ग की महत्ता का उपदेश दिया और अन्त में कहा कि पाण्डु के पाँच पुत्र पाँच इन्द्रों के समान शक्तिशाली हैं। हे राजन्! पाण्डवों को धर्म के अनुसार राज्य देकर आप अपने पुत्रों के साथ सुख संतोष से रहिये। विदुर के धर्मोपदेश को सुनकर धृतराष्ट्र ने कर्तव्य का उपदेश देने को कहा। फिर विदुर ने उसे धर्मप्रवृत्ति का उपदेश दिया। धृतराष्ट्र ने कहा कि इन वचनों को सुनने से मुझे तृप्ति नहीं होती। तब विदुर ने धृतराष्ट्र से कौरव और पाण्डव दोनों के साथ कोमलव्यवहार करने को कहा। इस सन्दर्भ में उन्होंने स्वयंवर में केशिनी नामक अनुपम सौन्दर्यवती कन्या को पाने के लिए सुधन्वा और विरोचन के परस्पर संवाद का वर्णन करके धृतराष्ट्र को धर्मोपदेश दिया। कहा कि दुर्योधन, शकुनि, मूर्ख दुश्शासन तथा कर्ण पर राज्य का भार रखकर आप कैसे उन्नति की आकांक्षा करते हैं? पाण्डव आप पर पितृभाव रखते हैं। आप भी उन पर पुत्रभाव रखकर

यथोचित व्यवहार कीजिए। धृतराष्ट्र के पूछने पर उसने महाकुलीन के लक्षण बताये। उन्हें सुनकर धृतराष्ट्र ने कहा कि विदुर! युधिष्ठिर के साथ मिथ्या व्यवहार किया है। इसलिए पाण्डव युद्ध करके मेरे पुत्रों को नाश कर डालेंगे। इसी कारण से मेरा मन उद्विग्न हो रहा है। इसलिए मुझे उद्वेगशून्य मार्ग का उपदेश करो। विदुर ने फिर पाण्डवों से सन्धि करके दुर्योधन को कुमार्ग से रोकने को कहा। विदुर के धर्मोपदेश सुनकर धृतराष्ट्र ने कहा कि आप जो कुछ कहते हैं, मेरा विचार भी वही है। पाण्डवों के प्रति मुझे सद्भावना है। लेकिन दुर्योधन से मिलने पर मेरी बुद्धि पलट जाती है। प्रारब्ध का उल्लङ्घन कोई भी नहीं कर सकता। मैं भी प्रारब्ध को निश्चल मानता हूँ। इसके सामने पुरुषप्रयत्न व्यर्थ हैं।

४. सनत्सुजातपर्व

इसमें (४१-४६) ६ अध्याय तथा २०३ श्लोक हैं। धृतराष्ट्र ने विदुर से, कहने के लिए "कुछ शेष रह गया हो तो उसे सुनाने की इच्छा प्रकट की। विदुर ने कहा कि आपके हृदय में स्थित सभी प्रश्नों का उत्तर देने के लिए सनुत्सुजात नाम से विख्यात ब्रह्माजी के पुत्र समर्थ हैं। ऐसा कहकर उसने ऋषि का स्मरण किया। स्मरण मात्र से प्रत्यक्ष सनत्सुजात ऋषि का स्वागत करके उस से धृतराष्ट्र के संशयों की निवृत्ति करने की प्रार्थना की। धृतराष्ट्र ने महर्षि से पूछा कि हे महर्षी! आप के सिद्धान्त के अनुसार मृत्यु ही नहीं है। लेकिन मैंने सुना था

कि मृत्यु से बचने के लिए देव दानवों ने ब्रह्मचर्य का पालन किया था। इन दोनों में से यथार्थ क्या है? उनके उत्तर के रूप में महर्षि ने कहा कि राजन्! दोनों पक्ष सत्य हैं। उनमें प्रमाद ही मृत्यु है तथा अप्रमाद अमृत। प्रमाद के कारण दानव पराजित हुये और अप्रमाद से देवगण ब्रह्मस्वरूप हुये। मृत्यु का कोई रूप देखने में नहीं आता। कर्मफल में आसक्त मनुष्य उसे भोगने के लिए देहत्याग के पश्चात् फिर देहधारण करता है। वह मृत्यु को जीत नहीं पाता। इस तरह धृतराष्ट्र के पूछने पर सनत्सुजात ने अनेक प्रश्नों का उत्तर दिया। इसे सनत्सुजातीय कहतें हैं।

५. यानसन्धिपर्व

इसमें (४७-७१) २५ अध्याय तथा ७७४ श्लोक हैं। संजय के द्वारा पाण्डवों के सन्देश को सुनने की इच्छा से अगले दिन राजा लोग बडे हर्ष के साथ सभा में उपस्थित हुये। दुर्योधन, दुश्शासन आदि भी सभा में थे। धृतराष्ट्र के पूछने पर संजय ने अर्जुन का सन्देश सुनाने का आरम्भ किया। अर्जुन ने जो कुछ कहा, उसे दुर्योधन सुनें। यदि दुर्योधन युधिष्ठिर का राज्य नहीं छोडता तो धृतराष्ट्र के पुत्रों को उसका फल अवश्य भोगना पडेगा है। उन्हें भीमसेन अर्जुन आदि महावीरों से युद्ध करना पडेगा। उस समय दुर्योधन पश्चात्ताप करेगा। भगवान् श्रीकृष्ण मेरे पक्ष में हैं। युद्ध न करने पर भी श्रीकृष्ण मन से जिस पुरुष के विजय की आकांक्षा करेंगे वह समस्त शत्रुओं को पराजित कर सकता है। मैं कर्णसहित धृतराष्ट्रपुत्रों का वध करके सम्पूर्ण कुरुराज्य जीत लूँगा। किसी के धृतराष्ट्र पुत्र को युद्ध में नहीं छोडूँगा। फिर भी भीष्मपितामह, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा और विदुर ये सब मिलकर जैसा कहें वही हो। समस्त कौरव दीर्घायु बने रहें।

भीष्म ने दुर्योधन से कहा कि श्रीकृष्ण और अर्जुन नर और नारायण ऋषि के अवतार हैं। लोकहित के लिए जब जब जहाँ युद्ध का अवसर आता है, तब तब वहाँ वहाँ ये बार बार अवतार ग्रहण करते हैं। हे दुर्योधन! मेरी बात नहीं मानी तो अवश्य कौरवों का नाश हो जायेगा। तुम सूतपुत्र कर्ण, शकुनि तथा पापी दुश्शासन इन तीनों के अभिप्राय का अनुमोदन करते हो। इनके वचन सुनकर कर्ण ने भीष्म का अधिक्षेप किया और कहा कि उसने कभी दुर्योधन का अनिष्ट नहीं किया। पाण्डवों से सन्धि करने की बात अनुचित है। उसने और भी कहा कि अकेले ही पाण्डवों को मार डालने में वह समर्थ है। कर्ण की बात सुनकर भीष्म ने उसका आक्षेप किया। द्रोणाचार्य ने भीष्म के वचनों का समर्थन किया और पाण्डवों से सन्धि करने का सलाह दिया। यद्यपि भीष्म और द्रोण की बात सार्थक थीं तथापि धृतराष्ट्र ने उनका तिरस्कार करके फिर संजय से पाण्डवों का समाचार पूछ लिया। उनके प्रश्न के उत्तर के रूप में सञ्जय ने बताया कि युधिष्ठिर युद्ध के लिए किन किन की सहायता ले रहा है। भीम और अर्जुन के पराक्रम का चिन्तन करते करते धृतराष्ट्र भयविह्वल हो गया और वह कौरवों के पास पाण्डवों से सन्धि करने का प्रस्ताव रखा। संजय ने धृतराष्ट्र के दोषों का

उद्घाटन करते पापी दुर्योधन को अनुचर सहित काबू में रखने का उपदेश दिया। अपने साथ रहनेवाले भीष्म, द्रोण, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, कर्ण आदि योद्धाओं के पराक्रम का वर्णन करके दुर्योधन ने अपने पिताजी धृतराष्ट्र को धैर्य दिया। उसने कहा कि हे तात! पाण्डवों के पास केवल सात अक्षौहिणी सेनाएँ हैं। इसलिए मेरी पराजय की सम्भावना नहीं है। इसलिए आप व्याकुल न हों। ऐसा कहकर दुर्योधन ने संजय से युधिष्ठिर के युद्धविषयक तैयारी के बारे में पूछने पर उसने सब कुछ बताया। धृतराष्ट्र ने दुर्योधन को पाण्डवों से सन्धि करने की सलाह दी। कहा कि हे दुर्योधन! तुम युद्ध से निवृत्त हो जाओ। तुम पाण्डवों को उनका यथोचित राज्यभाग दे दो। अमात्य सहित तुम्हारे जीवन निर्वाह के लिए आधा राज्य ही पर्याप्त है। वास्तव में शकुनि ही तुमसे यह कार्य करा रहा हैं। लेकिन दुर्योधन ने उनकी बातें नहीं मानी। कहा कि पिताजी! भीष्म, द्रोणाचार्य आदि पर भार रखकर मैंने पाण्डवों को युद्ध के लिए आमन्त्रित नहीं किया। कर्ण तथा मैं, दोनों युधिष्ठिर को बलिपशु बनाकर रणयज्ञ की दीक्षा का ग्रहण किया है। इस यज्ञ में रथ ही वेदी है। खड्ग स्रुवा है। गदा स्रुक् है। कवच मृगचर्म है। रथवाहक चार घोडे ही चतुरग्नि हैं। (चार अग्नि) बाण कुश और यश ही हविष्य है। मैं, कर्ण तथा मामा शकुनी तीन ही शत्रुसंहार कर डालेंगे। पाण्डवों के साथ सहजीवन सर्वथा असम्भव है। तीक्ष्ण सूची के अग्र भाग से जितनी भूमि बिंध सकती है मैं उतनी भी पाण्डवों को नहीं दे सकता। दुर्योधन की बात सुनकर धृतराष्ट्र अपने पुत्र दुर्योधन को त्याग करने का प्रस्ताव करके सभा में बैठे हुये समस्त भूपालों को समझा बुझाकर फिर संजय से श्रीकृष्ण तथा अर्जुन के सन्देश सुनाने के लिए कहा। श्रीकृष्ण ने अर्जुन के पराक्रम का जो कुछ वर्णन किया उसको संजय ने धृतराष्ट्र से कह दिया। सब कुछ सुनने के बाद धृतराष्ट्र ने पाण्डवों को कौरवों से अधिक शक्तिशाली बताया। पिता की बात सुनकर दुर्योधन अत्यन्त क्रुद्ध हुआ और आत्मप्रशंसा की। कर्ण ने अकेले ही सब पाण्डुपुत्रों को मार डालने का अहंकार व्यक्त किया। भीष्म के अधिक्षेप से कर्ण सभा छोडकर चला गया। विदुर ने चिडियों के दृष्टान्त के द्वारा कौटुम्बिक कलह को अनर्थ हेतु बताकर पाण्डवों से सन्धि करने

की सलाह दी। फिर धृतराष्ट्र ने अपने पुत्र दुर्योधन को समझाया। जब दुर्योधन श्रीकृष्ण और अर्जुन के सन्देश का निरादर किया तब सभा में बैठे हुये समस्त भूपालगण वहाँ से उठकर चले गये। इतने में व्यासमहर्षि वहाँ पहुँचे। उनके आदेश से संजय ने भगवान् श्रीकृष्ण की महिमा को बताया। और कहा कि कौरव पाण्डवों के बीच मैत्री की स्थापना के लिए श्रीकृष्ण यहाँ आनेवाले हैं। यह सुनकर धृतराष्ट्र संतुष्ट हुआ।

६. भगवद्यानपर्व

इस उपपर्व में (७२-१५०) ७९ अध्याय तथा २५१३ श्लोक हैं। संजय के चले जाने के बाद युधिष्ठिर श्रीकृष्ण के पास पहुँचकर कहा - हे कृष्ण! आपके

आश्रय में हम सुरक्षित हैं। धृतराष्ट्र दुर्योधन तथा उनके अमात्यों को हम स्वयं युद्ध के लिए ललकार रहे हैं। इस महान् युद्ध से आप हमारी रक्षा कीजिये। मैं तो सम्पूर्ण राज्य नहीं चाहता। केवल पाँच गाँव मैं ने माँगा। लेकिन दुरात्मा दुर्योधन उन्हें देने को भी इनकार कर रहा है। क्षत्रियधर्म के अनुसार पाप होने पर युद्ध तो अवश्य करना ही होगा। ऐसा कहकर युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण से उचित व्यवहार करने का उपाय पूछा। युधिष्ठिर की बातें सुनकर श्रीकृष्ण ने कौरव और पाण्डव दोनों पक्षों के हित के लिए सन्धि करने को कौरवों के पास जाने का प्रस्ताव किया। युधष्ठिर के सन्देह की निवृत्ति करते श्रीकृष्ण ने कहा - यदि कौरव मेरे साथ अनुचित व्यवहार करेंगे तो मैं उन सब को जलाकर भस्म कर डालूँगा। मेरा वहाँ जाना सफल हो या नहीं, तो भी निन्दा से बचने के लिए जाना आवश्यक है। युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण के प्रस्ताव का अनुमोदन किया।

भगवान् श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को युद्ध के लिए प्रोत्साहित किया और कहा कि स्पष्ट दिखाई देनेवाले लक्षणों से शत्रुओं के साथ युद्ध होने की सम्भावना है। भीमसेन के शान्तिविषयक प्रस्ताव सुनकर श्रीकृष्ण ने परिहास करके उसे युद्ध के लिए उत्तेजित किया। भीम ने कहा कि भय के कारण उसने शान्ति प्रस्ताव नहीं किया। इसका मुख्यकारण यह है कि भरतवंशियों का नाश न हो। इसके बाद अर्जुन नकुल और सहदेव भी अपने अपने मनोविचारों को व्यक्त किया। द्रौपदी ने श्रीकृष्ण के पास अपनी मनोव्यथा व्यक्त की और सन्धिप्रस्ताव की निन्दा की। अशपूर्ण नयनों से वह बोली - यदि भीमसेन और अर्जुन कृपण होकर कौरवों के साथ सन्धि चाहते हैं तो मेरे वृद्ध पिताजी अपने पुत्रों के साथ शत्रुओं से युद्ध करेंगे। जब तक दुश्शासन के श्याम भुजा को कटकर धूल में लोटती न देखूँ तब तक मुझे शान्ति नहीं मिलेगी। श्रीकृष्ण ने उसको आश्वासन दिया और कौरव पाण्डवों के मंगलमय कार्य करने के लिए श्रीकृष्ण ने कार्तिकमास के रेवती नक्षत्र में मैत्र नामक मुहूर्त में हस्तिनापुर की यात्रा की। बीच में घटित शुभ और अशुभ शकुनों का वर्णन किया। यात्रा करते करते श्रीकृष्ण वृकस्थल पहुँचकर रात को वहाँ सुखपूर्वक विश्राम किया।

दूतों के द्वारा श्रीकृष्ण के आने का समाचार पाकर अत्यन्त सन्तुष्ट धृतराष्ट्र ने श्रीकृष्ण के स्वागत सत्कार की व्यवस्था के लिए तथा मार्ग में विश्रामस्थान बनवाने के लिए दुर्योधन को आदेश दिया। उसने यथोचित व्यवस्था की। लेकिन श्रीकृष्ण उन विश्रामस्थानों पर दृष्टिपात न करके हस्तिनापुर की ओर निकले। धृतराष्ट्र ने श्रीकृष्ण को विभिन्न अमूल्य वस्तुओं का भेंट
करने की व्यवस्था की। विदुर ने धृतराष्ट्र से कहा- हे राजन्! श्रीकृष्ण अर्घ्य, पाद्य तथा कुशलप्रश्न को छोडकर कुछ नहीं स्वीकार करेंगे। वे तो कौरव और पाण्डवों के बीच शान्ति स्थापना करना चाहते हैं। इसलिए उनके वचन का पालन कीजिए। दुर्योधन ने जनार्दन को धन रत्न भेंट करने का विरोध किया और कहा - पितामह! श्रीकृष्ण के यहाँ आने पर उसे मैं बन्दी बनाऊँगा। उसके बन्दी बनाने पर समस्त भूमण्डल मेरे अधीन हो जायगा। दुर्योधन की कपटपूर्ण बात सुनकर

धृतराष्ट्र अपने मन्त्रियों के साथ दुःखी तथा व्यग्रमनस्क हो गया और दुर्योधन को ऐसी बात मत कहने का उपदेश दिया। दुर्योधन की दुर्बुद्धि पर कुपित भीष्म सभाभवन से उठकर चले गये।

अगले दिन भगवान श्रीकृष्ण वृकस्थल से हस्तिनापुर पहुँचे। राज भवन में उनके प्रवेश करते ही महाराज धृतराष्ट्र, द्रोणाचार्य, भीष्म तथा अन्य आसन से उठकर उनका स्वागत किये। फिर वहाँ से वे विदुर के गृह गये। उसके बाद कुन्ती के पास जाकर दुःखित उसको आश्वासन दिया। उससे बिदा लेकर श्रीकृष्ण दुर्योधन के घर गये। वहाँ दुश्शासन, कर्ण और शकुनि भी थे। अतिथिपूजा के बाद राजा दुर्योधन ने श्रीकृष्ण को भोजन के लिए निमन्त्रित किया। परन्तु श्रीकृष्ण ने उसे स्वीकार नहीं किया। निमन्त्रण की अस्वीकृति का कारण पूछने पर जनार्दन ने कहा कि कार्यसिद्धि होने पर ही दूत भोजन या सम्मान स्वीकार करते हैं। ऐसा नियम है। इसलिए कार्यसिद्धि होने के बाद ही मन्त्रियों सहित मुझे सत्कार करोगे। बिना कारण सद्गुणसम्पन्न तुम्हारे भाई पाण्डवों से विरोध करना उचित नहीं है। जो पाण्डवों से द्वेष करता है, वह मुझ से भी द्वेष करता है। जो उनके अनुकूल है वह मेरा भी अनुकूल है। तुम्हारी दुर्बुद्धि से दूषित यह सारा अन्न मुझे खाने योग्य नहीं है। दुर्योधन से ऐसा कहकर श्रीकृष्ण विदुर के भवन गये। अनुचर सहित भोजन करके रात को वहीं विश्राम किये। उस समय विदुर ने श्रीकृष्ण से कहा कि मेरे विचार में आपका यहाँ आना अच्छा नहीं है। दुर्योधन का विचार है कि अकेले कर्ण ही सब पाण्डवों को जीतेगा। इसलिए वह सन्धि का प्रस्ताव नहीं मानता। विदुर का वचन सुनकर श्रीकृष्ण अपने सन्धि प्रयत्न का औचित्य बताया।

अगले दिन सुबह दुर्योधन और शकुनि श्रीकृष्ण के पास आकर उन्हें राजसभा में आमंत्रित किये। भगवान श्रीकृष्ण के कौरवसभा में प्रवेश करते ही उनकी पूजा के लिए महाराज धृतराष्ट्र को आगे करके भीष्म, द्रोण आदि आगे बढे। श्रीकृष्ण को देखने नारद आदि ऋषिगण भी वहाँ पधारे। ऋषिलोग आसनों पर बैठने के बाद श्रीकृष्ण तथा अन्य राजाओं ने आसन ग्रहण किया। पश्चात् भगवान् श्रीकृष्ण ने धृतराष्ट्र की ओर देखकर इस प्रकार कहा कि हे भारत! क्षत्रियवीरों का नाश न हो। इसलिए कौरव पाण्डवों के बीच सन्धि स्थापना की प्रार्थना करने मैं यहाँ आया हूँ। समस्त राजाओं में कुरुवंश श्रेष्ठ है। यदि इस वंशीय कुछ अनुचित व्यवहार करेंगे तो उन्हें सन्मार्ग पर रखनेवाले आप ही हैं। आपके पुत्र धर्म और अर्थ को पीछे करके क्रूर मनुष्यों के समान आचरण करते हैं। दोनों पक्षों के बीच सन्धि कराना हम दोनों के अधीन है। आप अपने पुत्रों को काबू में रखिये। मैं पाण्डवों को नियन्त्रण में रखूँगा। इससे दोनों पक्षों की भलाई होती है। कुन्तीपुत्र आपकी सेवा के लिए तैयार हैं। जरूरत हो तो युद्ध के लिए भी। जो आपको अच्छा लगता है उसका अवलम्बन कीजिए। श्रीकृष्ण की बातें सुनकर सभासद चकित
हो गये और उसके उत्तर में कुछ नहीं बोल सके। धृतराष्ट्र को सन्धि करने का

उपदेश दिया। तब परशुराम ने दम्भोद्भव नामक सम्राट की कथा सुनाकर धृतराष्ट्र को सन्धि करने का उपदेश दिया। परशुराम का वचन सुनकर कण्वमुनि ने इन्द्रसारथि मातलि का उपाख्यान कहकर दुर्योधन को पाण्डवों के साथ सन्धि करने की सूचना दी। नारदमहर्षि ने भी शान्तिस्थापना के लिए अनेक उपाख्यानों के द्वारा दुर्योधन को समझाया।

धृतराष्ट्र के अनुरोध पर श्रीकृष्ण ने फिर दुर्योधन को समझाते उस से कहा कि हे दुर्योधन! पाण्डवों के साथ सन्धि करके, सुहृदों की बात मानकर चिरकाल तक सुखमय जीवन बिताओ। श्रीकृष्ण के अप्रिय वचन सुनकर दुर्योधन ने उनसे कहा कि हे केशव! आप पाण्डवपक्षपाती हैं। इसलिए मेरी निन्दा कर रहे हैं। धृतराष्ट्र सहित आप सब लोग अकारण ही मुझ पर द्वेष करते हैं। लेकिन ऐसा अपराध मैं ने कुछ भी नहीं किया। हे केशव! अणुमात्र भी भूमि पाण्डवों को नहीं दे सकता। यही मेरा निर्णय है। दुर्योधन की बातें सुनकर श्रीकृष्ण गुस्से में आये और उसके अकृत्यों का प्रस्ताव करके दुर्योधन, कर्ण, शकुनि तथा दुश्शासन को बन्दी बनाकर पाण्डवों को सौंप देने का सलाह दी। धृतराष्ट्र ने गान्धारी को बुलाकर उससे दुर्योधन को समझाने को कहा। गान्धारी भी पुत्र दुर्योधन को हितोपदेश करके श्रीकृष्ण के शरण लेकर पाण्डवों के साथ सन्धि करने की सूचना दी। लेकिन दुर्योधन माता के हितवचनों का अनादर किया। दुर्योधन, कर्ण, शकुनि और दुश्शासन आपस में गुप्तरूप से बातचीत करके श्रीकृष्ण को बन्दी बनाने का निर्णय लिया। इशारे से दूसरों के मन की बात जाननेवाले सात्यकि दुष्टचतुष्टय की दुर्बुद्धि को जान लिया और सभाभवन के द्वार पर सेना का सन्नाह करके श्रीकृष्ण को दुर्योधन आदि के षड्यन्त्र की सूचना दी। फिर धृतराष्ट्र और विदुर को भी बताया। धृतराष्ट्र के आदेश पर विदुर दुर्योधन को भाइयों सहित सभा में ले आया। धृतराष्ट्र और विदुर दोनों फिर श्रीकृष्ण की महिमा का वर्णन करके उसे साधुमार्ग पर चलने का हित वचन बोले। उसके बाद भगवान श्रीकृष्ण अपने को बन्दी बना दुर्योधन का अज्ञान बताकर विश्वरूप दिखाया। धृतराष्ट्र ने अपनी प्रार्थना के अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण से विश्वरूप दर्शन के लिए दो अदृश्य नेत्र प्राप्त किये। यह जानकर ऋषिगण आश्चर्य चकित हो वासुदेव की स्तुति करने लगे। तदनन्तर श्रीकृष्ण अपनी बुआ कुन्ती से मिलने वहाँ से चले गये।

कुन्ती के घर जाकर भगवान श्रीकृष्ण ने कौरवसभा में जो कुछ हुआ वह सब कुछ उसे बताया। उनके पूछने पर कुन्ती ने उसे पाण्डवों के लिए सन्देश सुनाया। इस सन्दर्भ में उसने प्रसिद्ध क्षत्रिय महिला विदुला और उसके पुत्र का संवादरूप उपाख्यान भी बताया। तदनन्तर श्रीकृष्ण कुन्ती को प्रणाम करके वहाँ से निकल गये। फिर भीष्म आदि कुरुश्रेष्ठ से बिदा लेकर कर्ण को रथ पर बिठाकर सात्यकि के साथ वहाँ से प्रस्थान होकर उपप्लव्य नगर की ओर निकले। श्रीकृष्ण के चले जाने के बाद भीष्म और द्रोणाचार्य पाण्डवों से सन्धि करने के लिए फिर समाझाये। कर्ण के साथ हस्तिनापुर से निकलने के बाद श्रीकृष्ण ने उसे उपदेश दिया कि हे कर्ण! आज से तु पाण्डवों के साथ सोदरप्रेम से व्यवहार

करो। तुझे भलाई होगी। लेकिन कर्ण ने दुर्योधन के पक्ष में ही रहने का अपना निर्णय प्रकट किया और कहा कि हे कृष्ण! यदि हम इस महायुद्ध में यदि विजय पायेंगे तो पुनः आपका दर्शन करेंगे। नहीं तो स्वर्ग में ही मिलन होगा। ऐसा कहकर श्रीकृष्ण का आलिङ्गन करके उनसे बिदा लेकर रथ के पिछले भाग से उतर गया और अपने रथ पर चढकर हस्तिनापुर लौट आया। श्रीकृष्ण सात्यकि के साथ उपप्लव्य नगर चले गये।

विदुर ने कुन्ती के पास जाकर कौरव और पाण्डवों के बीच भविष्य में होनेवाले दुष्परिणामों को बताया। व्यथित कुन्ती ने कर्ण के पास जाकर उसे अपना पहला बेटा कहकर पाण्डवों के साथ रहने का अनुरोध की। लेकिन वह उसकी बात नहीं मानी और कहा कि मैं तुम्हारे पुत्रों के साथ युद्ध अवश्य करूँगा। लेकिन अर्जुन के सिवा अन्य चार पुत्रों को अवकाश मिलने पर भी नहीं मारूँगा। युद्ध के बाद भी तुझे अवश्य पाँच पुत्र शेष रहेंगे। यदि अर्जुन मारे गये तो कर्ण सहित और यदि कर्ण मारा गया तो अर्जुन सहित पाँच पुत्र रहेंगे। पश्चात् वे दोनों अपने अपने स्थान चले गये। श्रीकृष्ण उपप्लव्य पहुँचकर पाण्डवों से कौरवसभा का सारा वृत्तान्त ज्यों का त्यों सुनाया और युद्ध के लिए उन्हें प्रचोदित किया।

७. सैन्यनिर्याणपर्व

इस उपपर्व में (१५१-१५९) ९ अध्याय तथा ३०४ श्लोक हैं। श्रीकृष्ण के द्वारा युधिष्ठिर जान लिया कि युद्ध किये बिना कौरव राज्य नहीं देंगे। युद्ध अवश्य होनेवाला है। उसने श्रीकृष्ण के सामने ही अपने भाइयों से कहा कि सब वृत्तान्त आपने भी सुन लिया। हमारे पास सात अक्षौहिणी सेना है। द्रुपद, विराट, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, सात्यकि, चेकितान तथा भीमसेन सात अक्षौहिणियों के सात सेनापति बनेंगे। अब प्रधान सेनापति के बारे में विचार करना है। इसलिए आप ही बताइये हमारा प्रधान सेनापति होने योग्य कौन है? युधिष्ठिर की बातें सुनकर सहदेव ने विराट को, नकुल ने द्रुपद को, अर्जुन ने धृष्टद्युम्न को, और भीम ने शिखण्डी को प्रधान सेनापति होने योग्य बताया। युधिष्ठिर के पूछने पर श्रीकृष्ण ने धृष्टद्युम्न को प्रधानसेनापति होने योग्य बताया। उनके वचन पर पाण्डव प्रसन्न हुये। सभी सैनिक सोत्साह युद्ध के लिए सन्नद्ध हुये। सभी ओर शङ्ख और दुंदुभियों की ध्वनि गूँजने लगी। राजा युधिष्ठिर समस्त सैनिकों के बीच में होकर चले। उनके साथ चिकित्सानिपुण वैद्य भी चले। द्रौपदी भी महाराज के साथ कुछ दूर जाकर फिर सभी स्त्रियों के साथ उपप्लव्य नगर लौट आयी। सेना की व्यूह रचना करके पाण्डव सैन्य कुरुक्षेत्र पहुँचे। वहाँ हिरण्वती नामक एक पवित्र नदी है, जो शुद्ध जल से भरी है। वहाँ पहुँचकर श्रीकृष्ण ने खाईं (परिखा) खुदवाई और उसकी रक्षा के लिए भटों की नियुक्ति की। राजाओं के रहने के लिए अलग अलग हजारों शिबिर बनवाये गये। समस्त उपकरणों के साथ वैद्य भी वहां रहते थे। शिबिरों में सभी उपकरण रखे गये। उधर दुर्योधन भी अपनी सेना को तैयार

करके शिबिर निर्माण के लिए आदेश दिया। उसने राजाओं से कहा कि आज ही यह घोषणा करा दी जाय कि कल सबेरे ही युद्ध के लिए प्रस्थान करना है। इसमें विलम्ब नहीं होना चाहिये। समयोचित कर्तव्य के बारे में पूछने पर श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा कि दुरात्मा कौरव आपके साथ न्याययुक्त व्यवहार नहीं कर रहें हैं। सर्वस्व त्याग करके हम कौरवों के साथ सन्धि नहीं चाहते। इसलिए उनके साथ युद्ध अवश्य होनेवाला है। युधिष्ठिर ने अपने भाइयों के साथ वहाँ के राजाओं को युद्ध के लिए तैयार हो जाने की आज्ञा दी।

राजा दुर्योधन ने अपनी ग्यारह अक्षौहिणी सेना को उत्तम मध्यम तथा अधमरूप में विभक्त करके उन्हें यथास्थान नियुक्त कर दिया। कुरुक्षेत्र में ग्यारह और सात मिलकर अठारह अक्षौहिणी सेनाएँ एकत्र हुई थीं। कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, शल्य, जयद्रथ, सुदक्षिण, कृतवर्मा, कर्ण, भूरिश्रवा, शकुनि तथा बाह्लीक कौरवसेना के ग्यारह सेनानायक थे दुर्योधन ने भीष्मजी से प्रार्थना करके उन्हें प्रधानसेनानायक पद पर अभिषिक्त किया। बलराम पाण्डवों से मिले और उनसे बिदा लोकर सरस्वती नदी के तटवर्ती तीर्थों का सेवन करने के लिए चले गये। वे कुरुवंशियों का नाश देखना नहीं चाहते। धृतराष्ट्र ने संजय से कौरव तथा पाण्डव सेना के व्यूह के बारे में पूछा। संजय ने सब कुछ सुनने को कहा।

८. उलूकदूतागमनपर्व

इसमें (१६०-१६४) ५ अध्याय तथा ३०१ श्लोक हैं। दुर्योधन ने कर्ण, दुश्शासन तथा शकुनि से गुप्तरूप से बातचीत करके शकुनि के पुत्र उलूक को दूत बनाकर पाण्डवों को संदेश भेजने का निश्चय किया। उसने उलूक को एकान्त में बुलाकर श्रीकृष्ण के सामने ही पाण्डवों को अपना संदेश सुनाने को कहा। संदेश का सार यह है कि हे युधिष्ठिर! अब लोकभयंकर कुरुपाण्डव युद्ध आ पहुँचा है। तुम लोगों ने जो जो प्रतिज्ञाएँ की हैं उन सब को पूर्ण करो। धर्मात्मा होकर कैसे अधर्म में मन लगा रहे हो। तुमने केवल पाँच गाँव माँगे थे। लेकिन बुद्धिपूर्वक ही मैंने तिरस्कार किया। इसका कारण यह है कि पाण्डवों को किसी प्रकार कुपित करें और उनके साथ युद्ध का अवसर हमें प्राप्त हो। श्रीकृष्ण के साथ आकर युद्ध करो। तदनन्तर उलूक पाण्डवों के शिबिर में जाकर युधिष्ठिर से मिला और उनको दुर्योधन की कही हुई सारी बातें कह सुनायीं। क्रुद्ध पाण्डवों ने अपनी ओर से दुर्योधन को उसके संदेश का उत्तर भेजे। श्रीकृष्ण भी अपनी ओर से संदेश भेजा कि हे दुर्योधन! कल ही तू रणभूमि में आ जाना और अपने पौरुष का परिचय देना। उलूक की बात सुनकर दुर्योधन अपनी सेना को कल सूर्योदय से पहले ही युद्ध के लिए तैयार होने का आदेश दिया। युधिष्ठिर ने भी धृष्टद्युम्न के नेतृत्व में अपनी सेना को युद्ध के लिए प्रस्थान कराया।

९. रथातिरथसंख्यानपर्व

इस उपपर्व में (१६५-१७२) ८ अध्याय २२५ श्लोक हैं। सेनापति पद प्राप्त

करके भीष्म ने दुर्योधन से कहा कि हे दुर्योधन! मुझे देवता गन्धर्व और मनुष्य तीनों की व्यूहरचना का ज्ञान है। उसके द्वारा मैं पाण्डवों को मोहित कर दूँगा। मैं तुम्हारी सेना की रक्षा करता हुआ पाण्डवों के साथ युद्ध करूँगा। इसलिए तुम्हारी मानसिक चिन्ता दूर हो जाय। फिर दुर्योधन ने अपने पक्ष के रथियों और अतिरथियों की जानकारी के लिए भीष्म से पूछा। उसने कौरवपक्ष के रथियों और अतिरथियों का वर्णन करके फिर पाण्डवपक्ष के लोगों का भी परिचय दिया। उसने कहा कि शिखण्डी पहले कन्या होकर वह फिर पुरुष हो गया था। इसलिए मैं उससे युद्ध नहीं करूँगा। युद्ध में पाये सब राजाओं को मारूँगा। परन्तु कुन्ती के पुत्रों का वध कदापि नहीं करूँगा।

१०. अम्बोपाख्यानपर्व

इस उपपर्व में (१७३-१९०) २४ अध्याय तथा ८०२ श्लोक हैं। दुर्योधन ने भीष्म से राजाओं को वध करके शिखण्डी को छोडने का कारण पूछा। तब भीष्म ने अम्बोपाख्यान सुनाया। पिता शान्तनुमहाराज की मृत्यु के बाद अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार भीष्म ने अपने भाई चित्रांगद को राज्याभिषिक्त किया। उसके निधन के बाद विचित्रवीर्य को राजा के पद पर अभिषेक किया। भीष्म ने योग्य कन्या को लाकर उसका विवाह करने का निश्चय किया। उसने सब नरेशों को जीतकर स्वयंवर सभा से काशीराज की तीन कन्याओं अम्बा, अम्बिका अम्बालिका को ले आकर अपने भाई के साथ विवाह के लिए अपनी माता सत्यवती को सौंप दिया। शाल्वराज के प्रति पहले अनुरक्त अम्बा भीष्म की अनुज्ञा पाकर उसके पास चली गयी। राजा से तिरस्कृत उसने अपने दुःख का प्रधान कारण भीष्म से बदला लेने का निश्चय करके तपस्वियों के आश्रम जाकर वहाँ रात बितायी। वहाँ के शैखावत्य नामक तपोवृद्ध अम्बा को आश्वासन दिया। अपनी माँ के जनक (नाना) होत्रवाहन की सूचना से अम्बा परशुराम की शरण में गयी। परशुराम और भीष्म के बीच घोर युद्ध हुआ। अन्त में भीष्म ने प्रस्वापनास्त्र प्रयोग करने का निश्चय किया। लेकिन नारदजी के अनुरोध से दोनों युद्ध से विमुख हो गये। राजकन्या अम्बा घोर तपस्या की। उसके प्रभाव से आधे शरीर से अम्बा नामकी नदी हो गयी और आधे अंग से वत्सदेश में कन्या हुई। उस जन्म में भी फिर भीष्म वध हेतु घोर तपस्या की। शिव के प्रत्यक्ष होने पर उसने महादेव से भीष्म को मारने का वर मांगा। परमेश्वर ने कहा कि हे कल्याणि! तेरा मनोरथ सिद्ध होगा। तू पहले कन्यारूप में उत्पन्न होगी। फिर कुछ काल के पश्चात् पुरुष हो जायगी। अम्बा में यमुना नदी के किनारे चिता की आग में जलकर भस्म हो गयी। अनपत्य द्रुपदमहाराज घोर तपस्या करके महादेव से भीष्म से बदला लेने के लिए पुत्र माँगा। परमेश्वर ने कहा कि हे राजन्! तुम्हें पहले कन्या प्राप्त होगी फिर वही पुरुष हो जायगी। द्रुपद की महारानी ने कन्या का जन्म दिया। उसने घोषणा किया कि यह मेरा पुत्र है। उसका नाम शिखण्डी रखा था। द्रुपद को छोडकर कोई नहीं जानता था कि वह कन्या है। केवल भीष्म ही नारद के द्वारा शिखण्डि

वृत्तान्त जानता था। युक्तवयस्क होने पर दशार्णराज की पुत्री के साथ शिखण्डी का विवाह सम्पन्न हुआ। उसके स्त्री होने का समाचार पाकर ससुर दशार्णराज हिरण्यवर्मा क्रुद्ध हो गये। शिखण्डिनी वन में जाकर स्थूणाकर्ण नामक यक्ष से अपने दुःखनिवारण की प्रार्थना की। कुछ समय के लिए यक्ष ने अपना पुरुषत्व उसे देकर उसका स्त्रीत्व धारण किया। कुपित कुबेर ने यक्ष को शाप दिया कि आज से वह यक्ष स्त्रीरूप में ही रहेगा और शिखण्डिनी शिखण्डी के नाम से पुरुषरूप में। पहले स्त्री होने के कारण भीष्म ने उसे युद्ध में न मारने का निश्चय किया। कौरव और पाण्डव सेना युद्ध के लिए प्रस्थित हुये।

।। उद्योग कथासार समाप्त ।।